

स्वतंत्र भारत

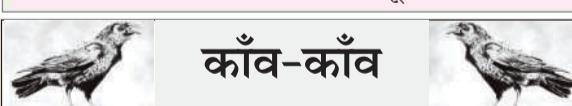
यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाप्यहम्।।

नई चुनौती

क्षतिमेट यानी जलवायु और उससे बनने वाले वातावरण की दृष्टि से अब से कीरब दो दशक पहले तक भी जिंदगी आसान ढूँढ़े पर थी पर अब उसकी मुश्किलें उतनी ही बढ़ती जा रही हैं। यौसम काफी तेजी के साथ असंतुलित हो रही है। इसके कारण दिन की बेतहाशा गर्मी की कार्रवाई बनाती गई। ये मिलिसिला अभी भी जीरही है। लेकिन पिछले दस सालों से बहेद गर्म गर्मों की संख्या भी बढ़ रही है। नतीजा यह है कि देश की तीन चौथाई जनसंख्या इसके जोखिमों का सामना करने के लिए मजबूर है। एक अध्ययन बताता है कि भारत के लगभग 57 प्रतिशत जिले जिनमें कुल आबादी का 76 प्रतिशत हिस्सा रहता है, वर्तमान में उच्च से लेकर अत्यधिक तापमान के जेवियम की स्थिति में है। पर्यावरण से जुड़ी संस्था कार्डिसिल ऑन एनर्जी एनवायरमेंट एंड वाटर (सीईडब्ल्यू) के मुताबिक सबसे अधिक गर्मी के खिलाफ वाले दस राज्यों केंद्रासित प्रदेशों में दिल्ली, गजस्थान, यूपी, एपी, महाराष्ट्र, गोवा, केरल, तमिलनाडू और ओडिशा प्रदेश शामिल हैं। इनमें गर्म गर्मों की संख्या तेजी से बढ़ी है। पर्यावरणिक शब्दावली में बहुत गर्म गर्म और बहुत गर्म दिन ऐसी अवधि के रूप में जाने जाते हैं जब न्यूनतम और अधिकतम तापमान 95 प्रतिशत की सीमा से अधिक हो जाता है। रात का समय आमतौर पर शांत होता है जिसमें स्वास्थ्य से संबंधित क्रियाएं अपने स्वाधारिक रूप में गतिशील रहती हैं लेकिन गर्म गर्मों की संख्या बढ़ने से इनके लिए खिलाफ काफी बढ़े हैं क्योंकि गर्म दिन तापमान उच्च रहने पर शेरीर को ठंडा होने का अवसर नहीं मिलता जबकि स्वास्थ्य शेरीर के लिए यह बेहद जरूरी है। यह समस्या दस लाख से ज्यादा टिक्क-वन और टिक्क-टू शहरों में ज्यादा है जहां औद्योगिक एवं अन्य गतिविधियां अधिक होती हैं समस्या एक और अधिक चिन्तित करने वाला पहलू यह है कि पर्यावरण रूप से टंडे दिलालीयी थेंगे में भी बहुत गर्म दिन और बहुत गर्म गर्म बढ़ी हैं। इस गर्म वातावरण के बढ़ने जाने का अपने देश की निम्न आय वाली श्रम शक्ति के परिवर्त्ये पर भी पड़ रहा है। आमतौर पर मौसमजनित माहौल के साथ किसी भी तरह तालेल बिटा लेने वाली देश की ज्यादातर जनसंख्या के लिए अब जरूरी होता जा रहा है कि असंतुलित जलवायु के कारण पैदा इस नई चुनौती से निपटने के लिए खुद को नए सिर से तैयार करो। इस पर सरकार का खुब भी देखें योग्य होगा।

चिंतनीय विषय

लखनऊ का पुलिस प्रशासन चाहे जितना तेजतर, सफल, सक्रिय हो, संगीन वारदातों की तह तक में जा चुका हो लेकिन टेंपो-ऑटो चालकों की हट दर्जे की मनमानी के साथ ही आपाराधिक करारूतों के सामने पस्त है। सड़कों पर मनचाहे ढंग से वाहन चलाना, लापवाही के साथ ओवरट्रैक करना, चलती सड़क के बीच बिना संकेत स्पीड के साथ वाहन मोड़ देना, सिनल की फ़िक्र बिना चौराहे पर करना, स्वारियों से बदतमीजी व मनमाना किरणा क्षमता तो आम बात हो ही गई है, अब स्वारियों से लूट, दुर्घटना और हत्या जैसी वारदातों भी ये कर रहे हैं। एक व्यक्ति के गलत होने से सभी को उसी ढंग का नहीं माना जा सकता लेकिन जब कई लोग अलग-अलग जगहों पर ऐसे अपराध कर रहे हैं तो साफ है कि ज्यादातर लोग इस मानसिकता के होते हैं। यह बात पिछले कीरब ढाई महीनों में सामने आ भी चुकी है। मार्च में आलमगांव से ऑटो में सवार एक महिला की दुर्कर्म के बाद हत्या ने आम लोगों को दहशत में लाकर झकझोर दिया था। तब उम्मीद जताई गई थी कि ऐसे लोगों की नोकर करने के लिए यात्री उपयोगी जाएं। इसके लिए कुछ दिनों तक काम भी ढूँगा जिसमें इन ऑटो-टैंपो चालकों का सत्यापन करने की मुहिम चली लेकिन जल्दी ही व्यवस्था की यह गमी ठंडी पड़ गई और अपराधी ड्राइवरों की गमी फ़िर जोर मारने लगी। आठ मई को थाकुरसांज व बीस मई को मुर्शीपुलिया क्षेत्र में छेड़वानी से सहायी दो महिलाओं चलते ऑटो व ई-रिक्षा से छलांग लगाकर अपनी इज्जत बचाई। अपराधों को छोटे-बड़े की श्रेणी में भले बांट दिया जाए लेकिन होता वह अपराध ही है। आज का छोटा अपराधी आजाद रहे तो कल को बढ़ा अपराधी बन ही जाता है। महिलाओं के साथ आपाराधिक कृत्य तो और अधिक वहशियाना होते हैं जिनमें जान बच भी जाए लेकिन दिलोदिमाग लंबे समय तक बुरी तरह हिल रहता है। चिंता की बात यह है कि ऐसे कृत्यों को प्रभावी कार्रवाई के योग्य क्षमी नहीं माना जा रहा और बहुत प्रचारित जीरे टॉलेंस की नीति इन पर क्षमी नहीं लागू हो रही।



हारे मुनीर को बनाया फील्डमॉर्शल

ज

नरल से फील्ड मार्शल बनने के बारे में जहां जा रहा है कि वह आने वाले समय में शहजाद शरीफ सरकार का तखा पलट सकते हैं। वैसे भी शरीफ सरकार फौजे के रहमो-करम पर ही बनी थी। वहां का सबसे लोकप्रिय नेता इसमें खान तो जेल में सड़ रहा है, मुनीर के फील्ड मार्शल बनने को लेकर हैरानी इसलिए उतनी ही बढ़ती जा रही है। यौसम काफी तेजी के साथ असंतुलित हो रही है। इसके कारण दिन की बेतहाशा गर्मी की कार्रवाई बनाती गई। ये मिलिसिला अभी भी जीरही है। लेकिन पिछले दस सालों से बहेद गर्म गर्मों की संख्या भी बढ़ रही है। नतीजा यह है कि देश की तीन चौथाई जनसंख्या इसके जोखिमों का सामना करने के लिए मजबूर है। एक अध्ययन बताता है कि भारत के लगभग 57 प्रतिशत जिले जिनमें कुल आबादी का 76 प्रतिशत हिस्सा रहता है, वर्तमान में उच्च से लेकर अत्यधिक तापमान के जेवियम की स्थिति में है। पर्यावरण से जुड़ी संस्था कार्डिसिल ऑन एनर्जी एनवायरमेंट एंड वाटर (सीईडब्ल्यू) के मुताबिक सबसे अधिक गर्मी के खिलाफ वाले दस राज्यों केंद्रासित प्रदेशों में दिल्ली, गजस्थान, यूपी, एपी, महाराष्ट्र, गोवा, केरल, तमिलनाडू और ओडिशा प्रदेश शामिल हैं। इनमें गर्म गर्मों की संख्या तेजी से बढ़ी है। पर्यावरणिक शब्दावली में बहुत गर्म गर्म और बहुत गर्म दिन ऐसी अवधि के रूप में जाने जाते हैं जब ज्यादा अनुभव तापमान उच्च रहने पर शेरीर को ठंडा होने का अवसर नहीं मिलता जबकि खटकर खुद रहा। एक अध्ययन बताता है कि भारत के लगभग 57 प्रतिशत जिले जिनमें कुल आबादी का 76 प्रतिशत हिस्सा रहता है, वर्तमान में उच्च से लेकर अत्यधिक तापमान के जेवियम की स्थिति में है। पर्यावरण से जुड़ी संस्था कार्डिसिल ऑन एनर्जी एनवायरमेंट एंड वाटर (सीईडब्ल्यू) के मुताबिक सबसे अधिक गर्मी के खिलाफ वाले दस राज्यों केंद्रासित प्रदेशों में दिल्ली, गजस्थान, यूपी, एपी, महाराष्ट्र, गोवा, केरल, तमिलनाडू और ओडिशा प्रदेश शामिल हैं। इनमें गर्म गर्मों की संख्या तेजी से बढ़ी है। पर्यावरणिक शब्दावली में बहुत गर्म गर्म और बहुत गर्म दिन ऐसी अवधि के रूप में जाने जाते हैं जब ज्यादा अनुभव तापमान उच्च रहने पर शेरीर को ठंडा होने का अवसर नहीं मिलता जबकि खटकर खुद रहा। एक अध्ययन बताता है कि भारत के लगभग 57 प्रतिशत जिले जिनमें कुल आबादी का 76 प्रतिशत हिस्सा रहता है, वर्तमान में उच्च से लेकर अत्यधिक तापमान के जेवियम की स्थिति में है। पर्यावरण से जुड़ी संस्था कार्डिसिल ऑन एनर्जी एनवायरमेंट एंड वाटर (सीईडब्ल्यू) के मुताबिक सबसे अधिक गर्मी के खिलाफ वाले दस राज्यों केंद्रासित प्रदेशों में दिल्ली, गजस्थान, यूपी, एपी, महाराष्ट्र, गोवा, केरल, तमिलनाडू और ओडिशा प्रदेश शामिल हैं। इनमें गर्म गर्मों की संख्या तेजी से बढ़ी है। पर्यावरणिक शब्दावली में बहुत गर्म गर्म और बहुत गर्म दिन ऐसी अवधि के रूप में जाने जाते हैं जब ज्यादा अनुभव तापमान उच्च रहने पर शेरीर को ठंडा होने का अवसर नहीं मिलता जबकि खटकर खुद रहा। एक अध्ययन बताता है कि भारत के लगभग 57 प्रतिशत जिले जिनमें कुल आबादी का 76 प्रतिशत हिस्सा रहता है, वर्तमान में उच्च से लेकर अत्यधिक तापमान के जेवियम की स्थिति में है। पर्यावरण से जुड़ी संस्था कार्डिसिल ऑन एनर्जी एनवायरमेंट एंड वाटर (सीईडब्ल्यू) के मुताबिक सबसे अधिक गर्मी के खिलाफ वाले दस राज्यों केंद्रासित प्रदेशों में दिल्ली, गजस्थान, यूपी, एपी, महाराष्ट्र, गोवा, केरल, तमिलनाडू और ओडिशा प्रदेश शामिल हैं। इनमें गर्म गर्मों की संख्या तेजी से बढ़ी है। पर्यावरणिक शब्दावली में बहुत गर्म गर्म और बहुत गर्म दिन ऐसी अवधि के रूप में जाने जाते हैं जब ज्यादा अनुभव तापमान उच्च रहने पर शेरीर को ठंडा होने का अवसर नहीं मिलता जबकि खटकर खुद रहा। एक अध्ययन बताता है कि भारत के लगभग 57 प्रतिशत जिले जिनमें कुल आबादी का 76 प्रतिशत हिस्सा रहता है, वर्तमान में उच्च से लेकर अत्यधिक तापमान के जेवियम की स्थिति में है। पर्यावरण से जुड़ी संस्था कार्डिसिल ऑन एनर्जी एनवायरमेंट एंड वाटर (सीईडब्ल्यू) के मुताबिक सबसे अधिक गर्मी के खिलाफ वाले दस राज्यों केंद्रासित प्रदेशों में दिल्ली, गजस्थान, यूपी, एपी, महाराष्ट्र, गोवा, केरल, तमिलनाडू और ओडिशा प्रदेश शामिल हैं। इनमें गर्म गर्मों की संख्या तेजी से बढ़ी है। पर्यावरणिक शब्दावली में बहुत गर्म गर्म और बहुत गर्म दिन ऐसी अवधि के रूप में जाने जाते हैं जब ज्यादा अनुभव तापमान उच्च रहने पर शेरीर को ठंडा होने का अवसर नहीं मिलता जबकि खटकर खुद रहा। एक अध्ययन बताता है कि भारत के लगभग 57 प्रतिशत जिले जिनमें कुल आबादी का 76 प्रतिशत हिस्सा रहता है, वर्तमान में उच्च से लेकर अत्यधिक तापमान के जेवियम की स्थिति में है। पर्यावरण से जुड़ी संस्था कार्डिसिल ऑन एनर्जी एनवायरमेंट एंड वाटर (सीईडब्ल्यू) के मुताबिक सबसे अधिक गर्मी के खिलाफ वाले दस राज्यों केंद्रासित प्रदेश

